परजीवी नियंत्रण

गाय एवं भैंस : पशुओं में अन्तः परजीवियों का संक्रमण एक गम्भीर समस्या है। यह पशु का खून चूसकर उन्हें कमजोर करते हैं साथ ही दूसरी बीमारियों को फैलाते है। इनसे बचाव के लिए 'ईवरमेक्टीन' नामक दवा का उपयोग सर्वोत्तम है। इस अकेली दवा से अधिकतर अन्तः तथा बाह्य परजीवी समाप्त हो जाते हैं। एक ही खुराक से परजीवियों का जीवन चक्र समाप्त हो जाता है। यह दवा नीओमेक, आइवोमेक आदि के नाम से बाजार में मिलती है। इसकी खुराक 1 मि.ली. प्रति 50 कि.ग्रा. शरीर भार की दर से खाल के नीचे चमड़ी में (सबकुटेनियस इन्जेक्सन) के रूप में लगाया जाता है। एक वयस्क पशु में एक इन्जेक्सन का खर्च मात्र रू0 50 आता हैं। गोल कृमि एवं फेफड़ों के कृमि नियत्रंण के लिए अन्य सस्ती दवायें जैसे पैनाक्योर, पायरेन्टल, फेनवेंडाजॉल, अलवेंडाजॉल, आक्सीक्लोजॉनाईड, लेवामिजॉल तथा लीवर कृमि के लिए जॉनिल, डिस्टोडिन, बैनमिन्थ आदि दवायें पशु–चिकित्सक के परामर्श से दे सकते हैं। पशुओं में कृमिनाशक के प्रयोग से दुग्ध उत्पादन में लगभग 5 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी पायी गयी है।

एस्कैरिस

भेंड़ एवं बकरी : प्रमुख अन्तःपरजीवियों में काक्सीडिया, हीमोंकोसिस, एस्कैरिस (गोलकृमि) एवं लिवरफ्लूक है। परन्तु इसकी पहचान आम भेड़–बकरी पालक के लिए आसान नहीं है अतः लक्षण के आधार पर उचित दवा एवं खुराक जानने के लिए पशु–चिकित्सक से सम्पर्क करें।

लिवर फ्लूक

काक्सीडियोसिस : एम्प्रोलीयम (5 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शारीरिक वजन), मोनेन्सीन (20–25 मि.ग्रा./कि.ग्रा. आहार), नाइट्रोफ्यूराजोन (70 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शारीरिक भार) अथवा सल्फोनामाइड्स (200–300 मि.ग्रा./कि.ग्रा. शारीरिक भार)।

हीमोंकोसिस : नीलवर्म (15 मि.ग्रा.), पैनाक्योर (5 मि.ली.) या बैनमिंथ (0.25 मि.ली.) प्रति कि.ग्रा. शारीरिक भार के अनुसार।

एस्कैरिस : फेनबेन्डाजोल, अलवेन्डाजोल अथवा लेवामीजोल

फ्लूक : जैनिल अथवा आक्सीक्लोजानाइड (10–15 मि.ली. एक खुराक)।

जानवरों में बाह्य परजीवी द्वारा होने वाले विभिन्न प्रकार की बीमारियों से जानवरों की मृत्यु हो जाती है तथा दूध और मांस का उत्पादन कम हो जाता है। जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

- सभी प्रकार की बाह्य परजीवी पशुओं के खून को चूसती हैं। एक बाह्य परजीवी प्रतिदिन कम से कम 1 से 2 मि.ली. रक्त पी जाती है, जिसके वजह से जानवरों में कमजोरी आती है।
- बाह्य परजीवी के काटने से जानवरों के शरीर पर घॉव हो जाते हैं जिसके कारण कीड़े पड़ सकते हैं तथा त्वचा रोग भी हो सकता है।
- बाह्य परजीवी के काटने से टिक्स पैरालिसीस बीमारी भी हो सकती है।
- बाह्य परजीवी से होने वाले रोग जैसे बॅबेसिओसीस, एनाप्लाजमोसिस, थैलेरिओसिस, अरलीकिओसीस और रिकेटिसीयल सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन बीमारियों के कारक बाह्य परजीवी में उनके अनेक पीढ़ियों तक पाये जाते हैं।
- बाह्य परजीवी निरोगी पशुओं में जानलेवा बीमारियों का फैलाव करते हैं इसलिए इनसे सम्बधित बीमारियों के निर्मूलन के लिए बाह्य परजीवियों को खत्म करना अत्यन्त आवश्यक है।

डेल्टामेथ्रीन (ब्यूटाक्स– ट्रेड नाम) तथा अमिटराज (एक्टोडेक्स– ट्रेड नाम) प्रमुख बाह्य परजीवी नाशक दवायें हैं। नई दवाईयाँ जैसे बेटीकॉल, पोरआन आदि भी बाजार में विभिन्न नामों से उपलब्ध हैं। ये सभी दवायें विषैली होती है, इसलिए इनकी सही मात्रा पशु–चिकित्सक से सलाह–मशविरा के बाद ही देनी चाहिए

क्योंकि कम मात्रा से बाह्य परजीवी मरती नहीं हैं और अधिक मात्रा से जानवरों को नुकसान होता है। इसलिए सभी तरह की दवाईयाँ कम्पनी के निर्देशानुसार एंव पशु–चिकित्सक की सलाह से ही उपयोग करना चाहिए।

औषधि	औषधि का स्वरूप	मात्रा	उपयोग करने की विधि
साइपरमेथ्रीन	ई.सी.	1 मि.ली./लीटर पानी के साथ	छिड़काव
डेल्टामेथ्रीन	ई.सी.	1 या 2 मि.ली./लीटर पानी के साथ	छिड़काव
अमिटराज	ई.सी.	1 मि.ली./लीटर पानी के साथ	छिड़काव
असूँन्टाल	डब्लू.पी.	1:10 मात्रा	छिड़काव
पेस्टोबेन	लोशन	1:10 मात्रा	छिड़काव

उपरोक्त दी गई औषधियों में से कोई भी एक औषधि पशु–चिकित्सक के निर्देशानुसार बड़े एवं छोटे पशुओं के उपयोग में लायें।